جون ۲۰۰۸ء

ماہنامہ **شعاع عمل** لکھنؤ

مؤسسۂ نور ہدایت حسینیہ غفران مآب لکھنؤ۔۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk, Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

Monthly

SHUA-E-AMAL

Lucknow June-2008

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

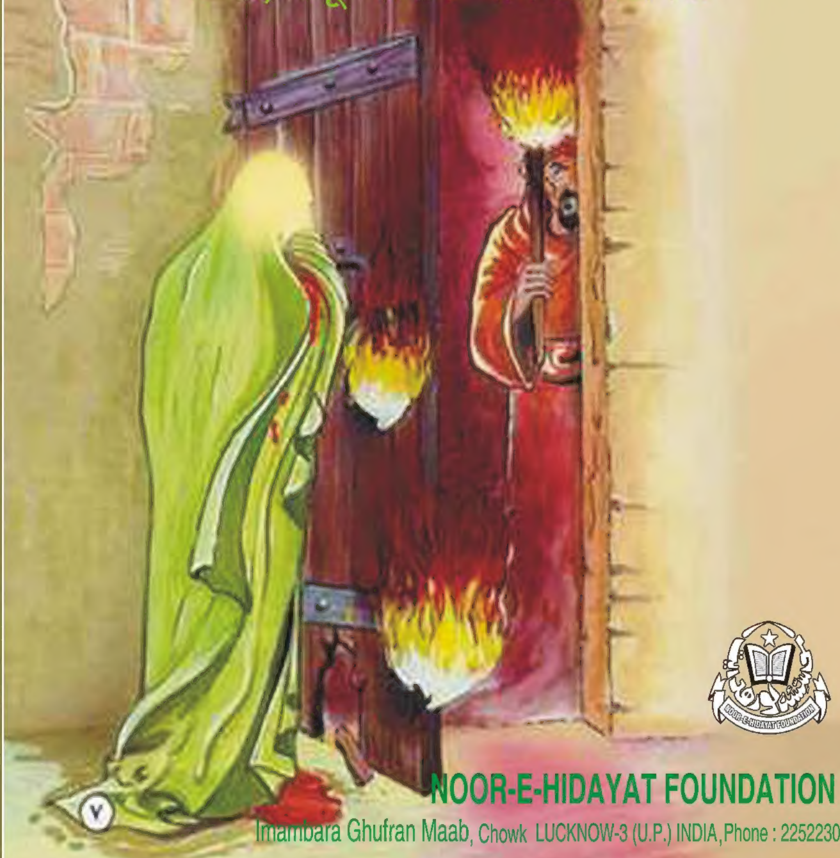

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष–4

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक –12

माह जून – 2008 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल

''लखनऊ''

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

सलाहकारी परिषद

प्रोफेसर अल्लामा सै0 अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफेसर सै0 हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
मु0 र0 आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़हीब नगरौरी

वार्षिक – 200 रु | मिलने का पता | क़ीमत – 20 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न0 मज़मून लेखक पेज न0

1– हज़रत फ़ातिमा ज़हरा (स0) की सीरत

मोहतरमा बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी साहेबा 3

2– शादीख़ाना आबादी

सैय्यिदुल उलमा आयतुल्लाहिल उज़्मा सै0 अली नक़ी नक़वी ताबा सराह 6

3– हमारी रस्में और बंदिशें

सैय्यिदुल उलमा आयतुल्लाहिल उज़्मा सै0 अली नक़ी नक़वी ताबा सराह 12

3– मुख्य समाचार

इदारा 15

अक़वाले मासूम–ए–कौनैन (स०)

1– जो औरत अपने शौहर को सख़्त और मुश्किल कामों के लिए मजबूर न करे वह जन्नती है।

2– जो औरत नमाज़ की पाबन्द हो और शौहर की इजाज़त के बिना घर से बाहर क़दम न निकाले और उसका कहा मानने वाली हो अल्लाह तआला उसके गुनाहों को माफ़ कर देगा।

3– बीवी जब तक अपने शौहर का हक़ अदा न करे गोया उसने ख़ुदा के हक़ को अदा नहीं किया।

हज़रत फातिमा ज़हरा (स०) की सीरत

मोहतरमा बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी साहेबा

बेअ्सत का पाँचवां साल था। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) बहुत सख़्त हालात में ज़िन्दगी बसर कर रहे थे इस्लाम एक कोने में था और मुसलमान थोड़े से थे और वह भी सख़्त हालात में।

शिर्क, बुतों की पूजा, जिहालत, ख़ुराफ़ात, आपसी लड़ाइयाँ, ज़ालिम की हुकूमत और अवाम की मज़लूमियत और लावारेसी की वजह से मक्के के माहौल में अंधकार था।

पैग़म्बरे अकरम (स0) आने वाले दौर के बारे में सोच रहे थे इन काले बादलों के पीछे एक रौशन ज़माना। वह ज़माना जो आम और ज़ाहिरी हालात की बुनियाद पर दूर बल्कि ग़ैरमुमकिन नज़र आ रहा था कि उसी साल पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की ज़िन्दगी में एक बड़ा वाक़ेआ सामने आया। सारे आलम की सैर के लिए मेराज की दावत दी गई और इस आयत ''लिनुरियहू मिन आयातिनल कुबरा'' की बुनियाद पर ख़ुदा की बड़ी निशानियों को आसमानों की बुलन्दियों पर अपनी नज़रों से देखा। वसीअ् रूह में और ज़्यादा गहराई पैदा हो गई जो अज़ीम पैग़ाम के लिए तैय्यार थीं।

मेराज की रात पैग़म्बरे इस्लाम जन्नत से गुज़र रहे थे। जिबरईल ने तूबा के पेड़ से एक फल पैग़म्बर (स0) को दिया। और जब पैग़म्बरे इस्लाम (स0) वापस तशरीफ़ लाए तो उस जन्नती मेवे से हज़रत फ़ातिमा ज़हरा के वजूद की शुरुआत हुई। और पैग़म्बरे इस्लाम जैसे अज़ीम बाप और जनाबे ख़दीजतुल कुबरा (स0) जैसी फ़िदा होने वाली माँ से 20 जमादिस्सानी को मासूमए कौनैन पैदा हुईं।

आलम यह था कि जब आपने ज़मीन पर क़दम रखा तो आपके मुबारक वजूद से ज़मीन रौशन हो गई। पूरब और पश्चिम का कोई हिस्सा ऐसा नहीं था जो आपके पाक वजूद से न चमका हो जिस घर में आप तशरीफ़ लाईं दस हूरें आपके साथ थीं। और हर एक के हाथ में थालियाँ और लोटे थे और लोटे आबे कौसर से भरे थे। इसके बाद वह औरत जो जनाबे ख़दीजा के पास थी उसने हज़रत सैय्यिदए आलम (स0) को लिया और आबे कौसर से नहलाया, सफेद लिबास आपको पहनाया। वह लिबास मिश्क वग़ैरा की ख़ुशबू से महक रहा था। इसके बाद देखा गया कि जनाब फ़ातिमा (स0) फरमा रही हैं:– ''मैं गवाही देती हूँ कि अल्लाह के अलावह कोई ख़ुदा नहीं और मेरे वालिदे बुज़ुर्गवार अल्लाह के रसूल, तमाम नबियों के सरदार हैं, मेरे शौहर तमाम औसिया के सरदार और मेरे फ़रज़न्द नस्लों के सरदार हैं''।

सैय्यिदए आलम की पाक ज़ात ने पैग़म्बरे अकरम (स0) को नस्ल के ख़त्म हो जाने का ताना देने वालों की उम्मीदों पर पानी फेर दिया। और सूरए कौसर की रौशनी में रसूल की औलाद, मासूम इमाम क़यामत तक के लिए भलाई और हज़रत फातिमा सलामुल्लाहि अलैहा फैय्याज़ी का चश्मा क़रार पाईं।

इस जन्नती औरत के 9 नाम हैं जिनमें से हर नाम दूसरे से ज़्यादा माने वाला है। 1–फातिमा, 2–सिद्दीक़ा, 3–ताहिरा, 4–मुबारका, 5–ज़किय्या, 6–राज़िया, 7–मरज़िय्या, 8–मुहद्दिसा, 9–ज़हरा। लेकिन हर नाम आपकी ख़ूबियों और बरकत वाले वजूद का तर्जुमान है।

इतना ही काफ़ी है कि इनके मश्हूर नाम ''फ़ातिमा'' में इनके मानने वालों के लिए बड़ी भारी ख़ुशख़बरी छुपी हुई है। क्योंकि फातिमा (स0) ''फतम'' से निकला है जिसके माने हैं ''जुदा होना'' या ''दूध छुड़ाना'' और पैग़म्बरे अकरम (स0) की हदीस के हिसाब से, जो रसूल (स0) ने हज़रत अली (अ0) से इरशाद फरमाई जानते हो मेरी बेटी का नाम ''फ़ातिमा'' क्यों रखा गया है? अर्ज़ किया: आप फरमाएं।

हुज़ूर (स0) ने फरमाया: इसलिए कि वह और इसके शिया, जहन्नम की आग से अलग कर दिये गऐ हैं। और यह भी फरमाया: ''मरियम अपने ज़माने की औरतों की सरदार थीं लेकिन मेरी बेटी फ़ातिमा (स0) पहले वालों और बाद वालों में सभी औरतों की सरदार हैं।''

इस बच्ची की पैदाइश ने हज़रत पैग़म्बरे अकरम (स0) को इतना ज़्यादा ख़ुश किया कि ख़ुदा के नबी ने ख़ुदा की बेपनाह तारीफ की। और उन लोगों की ज़बानें बन्द कर दीं जो रसूले अकरम (स0) को मक़्तूउन्नस्ल होने का ताना देते थे। चुनानचे ज़रूरी है कि दोनों जहाँ की शहज़ादी (स0) की सीरत पर एक नज़र डाल ली जाए।

लफ्ज़ सीरत ख़ुद एक ख़ामोश हक़ीक़त होती है इसलिए इससे दलील देने से पहले इसकी हालत पर नज़र ज़रूरी है क्योंकि हालत को जाने बग़ैर सीरत से दलील देना एक बेमाने काम होगा यानी जब तक सीरतों की हालत मालूम न हो जाए उस वक़्त तक उनके बारे में फैसला करना ग़ैरमुमकिन है। इस वक़्त ज़रूरत इस बात की है कि पर्दे के बारे में भी इस्लामी रवैय्या मालूम किया जाए ताकि उसकी रौशनी में सीरत को खंगाला जा सके। क़ुर्आन व सुन्नत के बहुत से बयानों से इस रवैय्ये की वज़ाहत करने के लिए इस वक़्त मासूमए आलम जनाब फ़ातिमा ज़हरा (स0) का ये जुमला नज़रों के सामने है जो आपने सरवरे काएनात के एक सवाल पर इरशाद फ़रमाया था। आपका सवाल यह था कि औरत के लिए सबसे अच्छी चीज़ क्या है?

हज़रत फ़ातिमा (स0) ने जवाब दिया कि ''न वह किसी नामहरम को देखे और न कोई नामहरम उसे देखे।''

और पैग़म्बरे गिरामी (स0) की यह रिवायत भी देखने लायक़ है कि आपने अपने सहाबियों से सवाल किया कि औरत की हक़ीक़त क्या है?

सहाबियों ने कहा: औरत नाम है हया का (यानी छुपाने वाली चीज़)।

फिर आपने पूछा: किस वक़्त औरत ख़ुदा से क़रीब हो सकती है?

सहाबियों ने कोई जवाब नहीं दिया। जैसे ही हज़रत ज़हरा ने इस मतलब को सुना अर्ज़ किया कि: औरत को ख़ुदा से क़रीब होने की हालत उस वक़्त हो सकती है कि वह अपने को घर की कनीज़ समझे और घर से बाहर न जाए।

यह सुनकर हज़रत ने फरमाया: फातिमा (स0) मेरे बदन का टुक्ड़ा है।''

जिसका मतलब यह है कि पर्दा एक तरफ से छुपाने का नाम नहीं बल्कि इसमें दोनों

तरफ की शर्म और ग़ैरत दाख़िल है। पर्दा सिर्फ घर में बैठने का नाम नहीं है बल्कि घर से निकलने के बाद भी मर्दों की नज़र से बचने का नाम है और घर में रहकर भी नामहरम की नज़र से अपने आपको बचाए रखने का नाम है। औरत को क़ानूनी एतेबार से घर के अन्दर रहकर घर के कामों की निगरानी करनी चाहिए।

जैसा कि जनाब सिद्दीक़ा ताहिरा (स0) के घर के कामों के सिलसिले में इमाम सादिक़ (अ0) से रिवायत हैः रसूले ख़ुदा (स0) हज़रत ज़हरा (स0) के घर में दाख़िल हुए, जबकि आपकी बेटी ऊँट के ऊन का सख़्त लिबास पहने हुए थीं। एक हाथ से चक्की पीस रही थीं और दूसरे हाथ से अपने बच्चे को दूध पिला रही थीं। पैग़म्बर की आँखों में आँसू आ गए और फरमायाः बेटी! दुनिया की कड़वाहट को आख़िरत की मिठास के मुक़ाबले में बर्दाश्त कर, क्योंकि ख़ुदा ने मुझ पर ये नाज़िल किया है कि तेरा परवरदिगार इतना तुझे देगा कि तू ख़ुश हो जाएगा। और अगर ज़रूरत के तहत निकल भी जाए तो अपने को मर्दों की नज़र से बचाए रखना चाहिए।

यही वजह है कि इस्लाम ने मर्द को औरत पर हुकूमत का दर्जा इस माने में दिया है कि वह औरत को घर से बाहर न जाने दे। घर के बाहर की ज़रूरतों को औरत के मुक़ाबले मर्द ज़्यादा बेहतर जानता है। और अगर इन हालात के जानते हुए भी बाहर जाने की इजाज़त देता है तो इसका मतलब यह है कि उसकी शर्म व हया रुख़सत हो चुकी है और ज़ाहिर है कि जिसकी शर्म व हया रुख़सत हो जाए उसका दीन व मज़हब कहाँ रह जाता है।

मासूमए कौनैन ने अस्मा से यह शिकायत की कि मदीनें में जनाज़ा उठाने का ऐसा तरीक़ा है जिससे मुर्दे का क़दो क़ामत नज़र आता है। हज़रत फ़ातिमा ज़हरा की यह बेचैनी बताती है कि आप मरने के बाद भी अपने क़दो क़ामत को सामने नहीं आने देना चाहती थीं और जो मरने के बाद यह ना चाहती हो वह ज़िन्दगी में कैसे बर्दाश्त कर सकती है। शायद यही वजह थी कि मुबाहला में जब गईं तो आगे रसूल (स0) और पीछे अली (अ0) को कर दिया ताकि फ़ातिमा की क़द सामने न आने पाए और फ़ातिमा ज़हरा (स0) के पैरों के निशान पर किसी की नज़र न पड़ने पाए।

हक़ीक़त में आप वह पाकदामन औरत हैं जिसका पर्दा सारी ज़िन्दगी बाक़ी रहा कि बाप के साथ नाबीना सहाबी भी आ गया तो उसे घर में दाख़िल होने की इजाज़त न दी और मरने के बाद भी मैय्यत उठवाने के लिए एक पर्देदार ताबूत का इन्तिज़ाम फरमाया।

आप ऐसी इबादत करने वाली थीं कि जिसके सिलसिले में हसन बसरी का बयान है कि इस उम्मत में सिद्दीक़ा ताहिरा से ज़्यादा इबादत करने वाला कोई और न था। इतनी देर तक अल्लाह की इबादत में खड़ी रहती थीं कि आपके मुबारक पैरों में सूजन आ जाती थी।

ख़ुदावन्दे आलम उम्मते तौहीद व रिसालत और मसलके विलायत के पैरोकारों को इस ख़बर के हासिल करने की तौफ़ीक अता फ़रमाए और हमारे समाज को हर बुराई, आफ़त से बचाए।

''इलाही आमीन''

□□□

शादीख़ाना आबादी

सैय्यिदुल उलमा आयतुल्लाहिल उज़मा सै0 अली नक़ी नक़वी

ख़ुदावन्दे आलम फ़रमाता है कि तुम में से जो मर्द ऐसे हों जिनकी औरतें मौजूद न हों और तुम में से जो औरतें ऐसी हों जिनके मर्द न हों उनकी शादी करो अगर वह फक़ीर होंगे तो ख़ुदा अपने करम से मालदार कर देगा। ख़ुदा के यहाँ बड़ी वुस्अत है और वह हर एक एक के हक़ की मिक़दार को जानने वाला है।

इसमें हिदायत की जा रही है और हुक्म दिया जा रहा है शादी के निज़ाम (सिस्टम) को बाक़ी रखने का जिस पर दुनिया में इन्सानियत के बाक़ी रहने की बुनियाद है। क्योंकि इस्लाम दुनिया में इन्सान की आबादी को बढ़ाने और तरक़्क़ी देने के लिए आया था वह उन चीज़ों को पसन्द नहीं करता जो इस दुनिया को बर्बाद कर देने की वजहें हैं बल्कि वह दुनियावी ज़रूरतों को भी क़ायदे और क़ानून में गिरफ्तार करके मज़हबी फर्ज़ की हैसियत दे देता है।

अक़्द के जुमले

यह इस्लाम का अक़्लमन्दी वाला वह रवैय्या है जिसने दुनिया के कामों में भी रूहानियत का पहलू पैदा कर दिया है और फ़र्ज़ के एहसास का जौहर डाल दिया है। वह चीज़ें जो देखने में अपने आपको आराम देने के लिए की जाती है और अपनी चाहत के लिए होती है उनमें ऐसी पाबंदियाँ लगा दी हैं कि इन्सान ऐसे वक़्त में भी अपने मालिक की याद को नहीं भुलाता और उसे अपनी ''बन्दगी'' का ख़याल रहता है जो फ़र्ज़ के एहसास का ख़ास जौहर है।

यही राज़ है जो अक़्द के जुमलों में छुपा हुआ है। यह समझना ठीक नहीं है कि इन जुमलों में कोई इस तरह का असर है कि जैसा मन्तरों में होता है या वैसी ख़ासियत है जैसी दवाओं में होती है। बल्कि इन लफ्ज़ों से इन्सान के दिल में फराएज़ की पाबन्दी और मालिक की इताअत का एहसास पैदा किया है। देखिये तो कि जिस वक़्त इन्सान की चाहतें उसे घेरे होती हैं तो इन्सान जैसे अन्धा हो जाता है। मगर फिर भी अगर उस वक़्त फौरन उसको यह ख़याल पैदा हो गया कि जब तक यह अलफाज़ न जारी किये जाएं हमारे लिये कोई कोई बहाने की सूरत नहीं है तो इसके माने यह हैं कि वह ऐसे वक़्त में भी अपने ख़ुदा को नहीं भूला। लिबास में, खाने–पीने में और ख़ास ज़िन्दगी की ज़रूरतों में शरीअत की तरफ से बहुत सी पाबन्दियाँ इसी उसूल की बुनियाद पर की गई हैं।

इन्सान निकाह करता है अपनी ज़ात की चाहत से मगर ख़ुदा के अहकाम भी याद रखता है इसकी वजह से एक तरफ अपनी चाहतें पूरी होती हैं तो दूसरी तरफ इबादत का सवाब हासिल होता है।

यह हज़रत ईसा (अ0) की तालीम थी जैसा कि इन्जील में है कि ''ख़ुदा की बादशाहत में दाख़िल नहीं होगा जिसने शादी कर ली।'' लेकिन रसूले ख़ुदा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0) की तालीम यह है कि ''निकाह मेरी सुन्नत में

दाख़िल है जो मेरी सुन्नत से हटेगा वह मुझसे ताल्लुक़ नहीं रखता।'' मगर सुन्नत से अलग होने के मानी यह हैं कि इन्सान उसे एतेराज़ के क़ाबिल समझे। अगर किसी मजबूरी की वजह से कोई शख़्स निकाह न करे तो वह इसमें दाख़िल नहीं है।

और ज़ोर दिया कि ''शादी करो और इन्सानी नस्ल को बढ़ाओ, मैं तुम्हारी बढ़ोत्तरी पर फख़्र करूँगा क़यामत के दिन।''

शादी में रोकी गई चीज़ों का होना

लेकिन अगर इन्सान ने अक़्दे निकाह या कोई तक़रीब (Function) इस तरह की कि ख़ुदा के भुलाने का ज़रिया बनी तो इस्लाम का मक़सद हासिल न होगा। दुनिया में शादी को हक़ीक़त में एक नेमत समझना चाहिए।

यह वक़्त आया कि औलाद हुई, मन्नतें मानी जाती हैं। दुआएँ माँगी जाती हैं, काहे के लिए? वह दिन आए कि बच्चा जवान हो और शादी का वक़्त आए। ख़ुदा के फ़ज़्ल से बच्चा जवान हुआ। माँ–बाप के दिल से पूछिये कि उनको उसकी शादी की कितनी तमन्ना है और कितनी उम्मीद। वह माँ–बाप जो दुनियावी ज़िन्दगी से मुसीबतों और परेशानियों की वजह से आजिज़ हों उनसे भी अगर पूछिये कि दुनिया में रहने को जी चाहता है? तो वह भी कहेंगे कि इस बच्चे का सेहरा देख लें। ख़ासकर जब लड़की की शादी में देर हो तो माँ–बाप को बड़ी फिक्र पैदा हो जाती है। यह और बात है कि शादी के वक़्त वह रोते हैं इसलिए कि उनकी लड़की उनसे छुट जाएगी मगर जब देर होती है तो बेचैनी होती है कि कहीं जल्दी से शादी हो जाए इसके लिए बहुत दुआएँ की जाती हैं। कुछ वह जो शरीअत के हिसाब से हैं और कुछ वह जो बिलकुल बेहूदा हैं।

जैसे बारह बजे रात को कोठे पर जाना, किसी तरह से आवाज़ का बुलन्द करना, शहदरे वाली मस्जिद में लड़कियों का भेजना, जिनकी ज़बान से शादी का निकलना बुराई समझा जाए। मगर इस रस्म के अदा करने के लिए वह लड़की भेजी जाए और ख़ास रस्म अन्जाम दी जाए। मैंने सुना है कि इस बारे में बहुत से अफसोसनाक वाक़ेआत भी हो जाते हैं। मेरा यह मतलब है कि शादी कितनी तमन्नाओं और आरज़ुओं से होती है फिर जब ख़ुदा ने अपनी मेहरबानी व करम से यह दिन दिखलाया और ऐसे रास्ते बनाए और ऐसी सूरतें पैदा कीं जिनकी वजह से यह दिन आया तो इस सरकश इन्सान को यह ज़िद है कि तो सही जो तेरी नेमत ही को तेरे गुनाह का बहाना बनाउँ।

रातें गुज़र रही हैं, गाने वाले और गाने वालियाँ (यह गाने वाले, मुज़क्कर के लिए नहीं, वह गाने वाले भी मोअन्नस हैं) यानी गाने वालों की टोली और गाने वालियों की टोलियाँ, वह इकटठा होते हैं। इसके बाद वह कुछ होता है जो इससे पहले कभी नहीं हुआ था। यह किस बात पर? यह इसलिए कि ख़ुदा ने यह दिन दिखाया कि लड़के या लड़की की शादी हुई। क़ुर्आन मजीद में इरशाद है– ''अगर तुम हमारी नेमतों का शुक्र अदा करोगे तो हम और ज़्यादा नेमतें अता करेंगे और अगर नेमतों की नाशुक्री करोगे तो सज़ा भी सख़्त देंगे।'' मगर अफसोस हमारे यहाँ बहुत से लोग ख़ुदा की नेमत पर उसका शुक्रिया अदा करने के बजाए उसकी नाफरमानी करते हैं।

बच्चा पैदा हुआ, लड़के या लड़की की

पैदाइश हुई। रत्जगा होगा, इसमें भी वह कुछ होगा जो ख़ुदा की नाराज़गी की वजह हो। इसका नतीजा है कि नेमतें ख़त्म होती जाती हैं। इसी का नतीजा है कि बरकत नहीं होती, मिल्लत के आलिमों ने रोका है कि नाच गाना नाजाएज़ है। बहुत से लोगों ने नहीं माना। मगर जब दौलत न रही तब आलिमों के फ़तवे को बहाना बनाते हैं अपनी मुहताजी पर। अब ''इस्मते बीबी बे चादरी'' उलमा अल्लाह से क़रीब होने की वजह से निकाह पढ़ा भी जाएँ मगर नाच गाने वाले न आएंगे बिना रुपया लिये हुए जब रुपया नहीं है तो नाचने वाले भी ग़ायब। अब जो आपसे पूछा गया तो आप फरमाते हैं उलमा ख़िलाफ हैं इसलिए हमने इस रस्म को रोक दिया। हम तो ख़ुश हैं कि ख़ैर इसी बहाने से सही ख़ुदा तो याद आया। यह हक़ीक़त में इन्सान का नेमत को न पहचानना और अपनी ज़िन्दगी के फ़रीज़ों का ख़याल न रखना है।

रस्मों की ग़ैर ज़रूरती पाबन्दी

वह रस्में जो बाप–दादा के वक़्त से चली आती हैं। वह इतनी ज़रूरी समझ ली गई हैं कि जैसे, उनके बिना निकाह सही ही नहीं हो सकता। रस्मों को तैय नहीं किया जा सकता। वह मुल्कों में नहीं शहरों में बदलती हैं। शहरों में नहीं घरों में बदलती हैं। हर घर की कुछ ख़ास रस्में तैय की गई हैं।

शरीअत के ख़िलाफ रस्में

इनमें से कुछ रस्में शरीअत के ख़िलाफ हैं जिस तरह से कुछ घरों में यह रस्म है कि मेहंदी जो दुल्हा की बहनें होती हैं वह लगाती हैं। अगर वह बहनें हक़ीक़ी (सही) बहनें हैं तब तो जाएज़ है लेकिन हक़ीक़ी और ग़ैर हक़ीक़ी का तो सवाल ही नहीं है क्योंकि आपके यहाँ तो भाई, बहन, चचा, मामू वग़ैरा का रिश्ता इतना बढ़ा दिया गया है कि शरीअत की नज़र नहीं जा सकती। किसी से पूछिये कि यह आपके भाई हैं, कहेंगे जी हाँ ''होते हैं'' इसी तरह बहुत सी बहनें वह हैं जो बहन हैं नहीं, मगर बहन होती हैं यह भी मेहंदी के मौक़े पर शरीक होती हैं। उनका हाथ जिस्म में लगना नाजाएज़ है।

इसके बाद बहुत से घरानों में यह रस्म है कि जब दुल्हा का अक़्द हो जाता है तो वह अन्दर सलाम करने औरतों में जाता है तो उस वक़्त पर्दे का कोई ख़ास सवाल नहीं होता। अक़्द हो गया ना! कोई पर्दे का सवाल नहीं। उस वक़्त सब महरम हैं हालांकि अक़्द एक ही के साथ हुआ है। ऐसी ही मुमकिन है और भी रस्में हो जो शरीअत में जायज़ नहीं हैं।

बेजा और फालतू रस्में

वह चीज़ें जो ख़ास हैसियत से नाजाएज़ नहीं की जा सकतीं। बेजा ख़र्च में दाख़िल होकर और ज़िन्दगी की ज़रूरी चीज़ें बनकर तबाही की वजह बन्ती हैं। उन्हें इस तरह से ज़िन्दगी की ज़रूरत बना दिया गया है कि लड़कियाँ बैठी रह जाती हैं। अक़्द नहीं किया जाता इसलिए कि इतना रुपया नहीं कि सारी रस्में पूरी की जा सकें।

मंगनी

शुरुआत होती है मंगनी से। बेशक लड़के वालों का हक़ है लड़की वालों से बातचीत करें यानी शादी का पैग़ाम दें। इसमें ज़रूरत इस बात की है कि लड़के के अस्ली हालात जो हों, जो अस्ली उसकी आमदनी हो, वह लड़की वालों को बताया जाए। लेकिन आम तौर से उस वक़्त

ग़लत उम्मीदें बंधाई जाती हैं। यह ज़िन्दगी के लिऐ नुक़सान पहुँचाने वाला है अगर उसी वक़्त से सही हालात मालूम हों तो बाद में बुरे नतीजे का ख़तरा नहीं है। लेकिन अगर कुछ ग़लत हालात बयान करके और उम्मीदें क़ायम करके अक़्द कर दिया जाए जो बाद में ग़लत साबित हों तो इसकी वजह से बाद में बहुत अफसोसनाक नतीजे पैदा हो सकते हैं।

कुछ जगहों पर लड़के वाले इसकी आरज़ू करते हैं कि उस लड़की के साथ दहेज़ और माल के हासिल करने का इत्मिनान कर लें और यह पता करें कि लड़की को क्या मिलेगा? मेरी राय में यह बहुत ही नीची सोंच है। लड़की का खाना और ख़र्चा तो लड़के के ज़िम्मे है इसलिए लड़की वालों को ज़रूरत है कि वह लड़के की माली हालत की तरफ से इत्मिनान हासिल करें मगर लड़की के माल से शौहर को क्या मतलब? क्या वह यह चाहता है कि उसकी ज़िन्दगी औरत के माल और दौलत से गुज़रे? यह बहुत ही बेग़ैरती की बात है।

माँझा

अक़्द के पहले माँझा है। इसमें दुल्हा पर इतनी मुसीबत नहीं पड़ती लेकिन दुल्हन एक कोठरी में क़ैद करके बिठा दी जाती है। ज़र्द रंग के रंगे हुए कपड़े पहना दिये जाते हैं। इसके बाद रोका गया है कि वह बाहर न निकले। उसी कोठरी में रहना चाहिए।

अब ज़ाहिर है कि ज़माने के हालात इन्सान के ख़यालों के पाबन्द नहीं होते। अक्सर ऐसा इत्तफाक़ होता है कि जो दिन व तारीख़ तैय था वह टल गया। अब एक महीने बाद अक़्द होगा। मगर जब तक अक़्द न हो वह बेचारी उस कोठरी में रहेगी। रोज़ बटना मला जाएगा, रोज़ तेल मला जाएगा यहाँ तक कि अक़्द की तारीख़ आए। इस बीच अगर शरीअत के हिसाब से ज़रूरत की वजह से उसको पाक होना वाजिब भी हो तो हरगिज़ नहीं। उसे नहाना मना है। शरीअत का हुक्म इस मामले में कुछ नहीं समझा जाएगा, यह बिलकुल नाजाएज़ है और अगर शरीअत के हुक्म से टकराव नहीं है तब भी वह बेकार और तकलीफ देने वाली चीज़ है।

सान्चक़

कुछ घरों में सान्चक़ और बरी होती है। इसकी क्या सूरत है? मटकियाँ, मटकियों में दही मछलियाँ। यह सब वहाँ भेजा जाएगा इसके साथ जोड़े। यह कोई बुरी बात नहीं है लेकिन जोड़े वह होना चाहिएं जो लड़के के लिए आगे काम आएं लेकिन इसमें कुछ तो ख़ाली दिखावा है दसूरे यह कि अगर इतनी ताक़त नहीं है कि यह अन्जाम पा सके तो माँगे के जोड़े लिये जाते हैं किराये पर जोड़े लिये जाते हैं। चौथी का जोड़ा भारी होना चाहिए। वह चौथी का जोड़ा अक्सर माँगे या किराये का लिया जाता है। अब आप बतलाइये कि इज़्ज़त के लिए किया था या ज़िल्लत के लिए। ज़ाहिर है कि इज़्ज़त के लिए, तो जब वह चीज़ें जिसके यहाँ ये आई थीं वहाँ कल चली गईं तो इज़्ज़त कहाँ रही। जो कुछ भी मुमकिन हो आप से वह दे दीजिये इसमें ज़बरदस्ती दिखावे से कोई फायदा नहीं।

मंढा (ढाँकना/बन्द करना)

इसके बाद मंढा (ढाँकना/बन्द करना) होता है। यह शाल से मंढा जाता है। इसके नीचे एक जगह पर दुल्हन बिठाई जाती है और मालूम नहीं क्या–क्या होता है।

बारात

इसके बाद बारात यानी दुल्हा वाले दुल्हन के यहाँ जाएँ और वहाँ अक़्द हो। यह बिलकुल ठीक है, जनाब ख़दीजा का अक़्द भी यूँ ही हुआ था।

अल्लाह के रसूल (स0) जनाबे हमज़ा व जनाबे अबुतालिब और बनी हाशिम के साथ जनाबे ख़दीजा के यहाँ गये थें जनाब मासूमा का अक़्द अस्ल में तो अर्श पर हुआ था और दुनिया में मस्जिद में हुआ। अमरुलमोमिनीन तशरीफ ले गये थे।

यह बारात एतेराज़ वाली नहीं है। लेकिन दुल्हा घोड़े पर ज़रूर बैठे, चाहे घोड़े पर बैठना न आता हो, इसी तरह की कुछ और बेकार बेजा रस्में जिनकी कोई सही बुनियाद नहीं है।

हिन्दुओं की रीति–रिवाजों का असर

जब हम इन रस्मों पर ग़ौर करते हैं तो मालूम होता है कि वाक़ई हिन्दुओं के यहाँ जब जाहिलियत के ज़माने में लड़कियों को ग़नीमत के माल की तरह ले जाया जाता था अब वह ज़माना गुज़र गया लेकिन उसकी यादगारें रस्मों की तरह बाक़ी रह गईं। चुनानचे इसका असर सभी रस्मों में देख लीजिये जिस वक़्त से बारात आती है जब तक कि अक़्द न हो जाए उस वक़्त तक उनके साथ मुख़ालिफ सुलूक किया जाता है। वह पानी तक नहीं पा सकते क्योंकि अभी तो लड़ाई है जब लड़ाई जीत ली जाएगी तब सब एक हो जाएंगे। कुछ घरानों में तलवारों का साया भी सर पर किया जाता है।

फिर चौथी की रस्म। इसमें एक टोली इधर होती है और एक टोली उधर। बीच में होते हैं कई फल, एक टोली दूसरे पर हमला करती है और फलों से मारती है चाहे किसी के चोट ही लग जाए मगर कोई परवाह नहीं की जाती। यह यादगार है उस रस्म की, उस ज़माने में फल लोहे के होते थे अब खाने के होते हैं। यह हक़ीक़त में सब हिन्दुओं की रस्में हैं जो मुसलमानों में आ गई हैं इसकी वजह यह है कि अकबर ने अपने ज़माने में कई क़ौमों में शादियाँ कीं। यहाँ तक कि हिन्दुओं के यहाँ भी शादियाँ की और उनकी रस्मों को भी अदा किया। क्योंकि वह एक बहुत बड़ा बादशाह था। नये मज़हब को क़ायम करना चाहता था। अल्लाहु अक्बर में जल्ला जलालहू अपने नाम की मुनासबत से अज़ान की तकबीरों में दाख़िल कर दिया। इसकी वजह से मुसलमानों में यह रस्में पाई जाती हैं। इराक़ जाइये, ईरान जाइये, मिस्र जाइये लेकिन यह रस्में नहीं हैं जो आपके यहाँ पाई जाती हैं।

लिबास

आप अपने यहाँ देखिये। दुल्हा का लिबास जो होता है वह उन आम कपड़ों से अलग होता है जो मुसलमानों में आम तौर से चलते हैं। हक़ीक़त में वह तस्वीर होती है उस लिबास की जो हिन्दुओं में चलता है। फिर सिर्फ रेशम का होना उसका हिस्सा है हालाँकि रेशम का पहनना मर्दों के लिए नाजाएज़ है उसमें लचका, पटठा वग़ैरा भी होता है इससे भी मर्दों में कोई ख़ूबसूरती पैदा नहीं होती।

औरतों का बहाना

कुछ लोग जो पढ़े लिखे या इल्म वाले हैं अफसोस है कि इन मामलों में वह भी आकर

कमज़ोर हो जाते हैं। जब आप उनसे पूछिये कि यह क्या है तो कहेंगे कि औरतों से बस नहीं चलता। इनसे मजबूर हैं लेकिन यह जवाब बिलकुल ग़लत है।

पहले तो मैं कहूँगा कि औरतों का ज़हन बनाने की ज़िम्मेदारी ख़ुद मर्दों पर है। अगर शुरु ही से मर्द इस तरह की तालीम और हिदायत करते रहें तो शादी के मौक़े पर वह ज़िद ही न करेंगी। रिसालतमॉब ने इरशाद फरमायाः

''तुम में से हर शख़्स अपने घर का हाकिम है और हर हाकिम अपनी रिआया को जवाब देने वाला है कि उसने कैसी तरबियत की।

फिर अगर आपने उनके ख़यालात की इस तरह से इस्लाह न की तब भी आप इस बारे में उनकी पैरवी करने वाले क्यों बन जाएं कि वह जो कहें आप करें। हालांकि क़ुर्आन मजीद में कहा गया है किः

''मर्द ज़िम्मेदार हैं औरतों के।''

लेकिन इस बारे में आपने उनको हाकिम क़रार दे दिया है। आपके यहाँ ''औरतें मर्दों की हाकिम हैं।'' अगर मालूम हो जाए कि आप ऐसा न करेंगे तो हरगिज़ वह ज़िद न करें मगर आप अपने ज़ाती मामलात में तो हद से आगे बढ़ते हैं। किसी वक़्त खाना वक़्त पर तैयार न हुआ त्योरियों पर बल आ गया। कौन कहता है कि शरीअत ने खाना पकाने की ज़िम्मेदारी भी औरतों पर लगाई है। कौन कहता है कि शरीअत ने कपड़े सीने की ज़िम्मेदारी भी औरतों पर लगाई है। कौन कहता है कि शरीअत ने कपड़े सीने की ज़िम्मेदारी औरतों पर लगाई है। यह तो मुख़ालिफ लोग इस्लाम पर बेकार में एतेराज़ करते हैं कि इस्लाम ने औरत को कुछ हक़ (अधिकार) नहीं दिये। वरना इस्लाम ने तो औरत को इतने हक़ दिये हैं जितने किसी मज़हब ने नहीं दिये। अमली हैसियत से इस्लाम ही ने औरत को ज़िन्दगी का साथी क़रार दिया है। हक़ीक़त में यह फर्ज़ तो वह हैं जो मुहब्बत के उसूल के तहत अन्जाम पाना चाहियें। यह तो कामों के सही तरह से करने का तरीक़ा है कि काम बाट लिया जाए। फर्ज़ कीजिये कि घर में एक माँ और एक बेटा है तो क्या होगा? बेटा अगर नौकरी पर जाए तो माँ खाना पकाएगी। इसका मतलब यह नहीं है कि माँ पर बेटे की इताअत वजिब हो गई। यह तो अख़लाक़ की वजह से फर्ज़ हो जाता है। इसी तरह घर में भाई बहन हैं तो वह क्या करें? भाई जिस वक़्त नौकरी पर जाए बहन खाना तैयार करेगी। इसी तरह शौहर और बीवी है तो तो बीवी घर का ख़याल रखेगी। इसका मतलब यह नहीं है कि हुकूमत क़ायम हो गई। औरत ख़िदमत करने वाली नहीं है। आज कल दुनिया वाले पर्दे पर जो एतेराज़ करते हैं तो मैं कहूँगा कि इस्लाम ने औरत को मालदार क़रार दिया है और मर्द को मज़दूर बनाया है। इसके ज़िम्मे ज़िन्दगी के निज़ाम की हैसियत से घर का करोबार है। आप उन बातों में औरत से पैरवी चाहते हैं जिनमें ख़ुदा ने उस पर पैरवी को वाजिब नहीं किया लेकिन जब ऐसे मामले सामने आते हैं जो शादी की रस्मों से जुड़े हैं तो मालूम होता है कि आपसे बढ़कर औरत का कोई इताअत करने वाला नहीं है।

(बाक़ी आइन्दा)

हमारी रस्में और बन्दिशें

सैय्यिदुल उलमा अल्लामा सै0 अली नक़ी नक़वी

मुझे इत्तफाक़ हुआ एक बार एक अक़्द में शिरकत करने का। दुल्हा जिनका निकाह हो रहा था B.A. थे। उनके बाप माशाअल्लाह अंग्रेज़ी बोलने वाले, क़ौम परस्त और तह्सीलदार। मामू एक कालेज के प्रोफेसर ग़रज़ सब रौशन ख़याल वाले यानी पूरा घर आफताब। मुझसे अक़्द पढ़ने का वादा हुआ और चूँकि जाना दूर था इसलिए तैय हुआ कि उसी मोटर पर जिस पर दुल्हा जाएगा मैं भी सवार हूँगा। चुनानचे ऐसा ही मोटर आया और हम लोग निकले। देखा तो दुल्हा सर से पैर तक लाल कपड़े पहने हुए जिसमें लचका पठ्ठा और ना मालूम क्या–क्या, हाथ में कंगने के साथ एक कटारी बंधी हुई और चेहरे पर चार–चार सेहरे जिनके बोझ से गर्दन का उठाना मुश्किल, सख़्त गर्मी थी और दोपहर का वक़्त था मैं ख़ामोशी के साथ चला जब शहर की हदें ख़त्म हो गईं और बाहर निकले तो मैंने दुल्हा से कहा कि अब आप सेहरा उलट दीजिये, बहुत गर्मी है, जब वहाँ पहुँचेंगे तो फिर सेहरा डाल लीजियेगा। उन्होंने जो मुझें अपने हालत पर मेहेरबान पाया तो कहने लगे कि मैंने तो समझ लिया कि जिस दिन किसी का अक़्द हो उस दिन वह अपने को मुर्दा समझ ले। मुझको मौक़ा मिल गया। मैंने कहा आप तो पढ़े लिखे हैं आपके बाप इतने सुधार वाले और आपके मामू ऐसे। फिर आपके यहाँ यह पाबन्दियाँ कैसी? जवाब दिया कि मैंने कहा था मगर वालिद ने मुझे डाँट दिया। दूसरे दिन उनके बाप से मुलाक़ात हुई तो मैंने उनसे बताया और कहा कि आपके यहाँ तो ऐसी बातों का होना ताज्जुब है। कहा "जी हाँ इन बातों को बुरा तो मैं भी समझता हूँ मगर एक ख़ाला हैं उनकी वजह से यह सब कुछ हो गया।" मैंने दिल में कहा कि एक ख़ाला थीं जब तो यह हुआ। अगर माशाअल्लाह घर औरतों से भरा होता तो क्या होता।

हक़ीक़त यह है कि इन लोगों की तरफ से यह सिर्फ रौशन ख़याली का दिखावा है या इसे फैशन समझ लीजिये कि यह इन बातों को ज़बान से बुरा कहते हैं लेकिन अगर हक़ीक़त में इन्हें इन बुराईयों का एहसास होता और नज़र में अहमियत होती तो यह ज़रूर इन बातों से मना करते।

अच्छा इन बातों को जाने दीजिये। दोनो तरफ की रज़ामन्दी तो अक़्द के लिए शरई हैसियत से बिलकुल लाज़िम व ज़रूरी है मगर आपके यहाँ रस्मों में इसकी जगह नहीं। लड़की की ख़ुशी किसी तरह मालूम नहीं की जाती। बल्कि अगर किसी तरह

लड़की की नाख़ुशी की जानकारी हो जाए तो कभी–कभी माँ–बाप को ज़िद हो जाती है और वह कहते हैं कि अब तो हम यहीं करेंगे। इसकी वजह से समाजी ख़राबियाँ पैदा होती हैं। बेशक आपके यहाँ शर्म और हया के बिना टूटे उनका इरादा मालूम हो सके इसके लिए एक बेहतरीन सूरत यह है कि उनसे किसी और लड़की का नाम लेकर मश्वरा कीजिये कि उसका अक़्द फलाँ लड़के के साथ किया जाए? इस तरह वह अपने ख़याल को अज़ादी से सामने ले आएंगी और आपको इस ख़याल की पाबन्दी ज़रूरी समझनी चाहिए।

यह समझ लेना कि मामले वाले हम हैं। वह कुछ नहीं, ग़लत है। शरीअत में तो मामले वाले वही हैं। अक़्द के वक़्त अक़्द की वकालत उन्हीं से हासिल की जाती है मगर आपने रस्में ऐसी बना दीं कि उनकी ख़ुशी और नाख़ुशी का इसमें पता नहीं चल सकता जब अक़्द करने वाला वकील उन से पूछे तो ख़ामोश रहना रस्म, पास बैठने वालों का ज़िद करना कि ''हूँ'' कह दो रस्म में दाख़िल, इस ''हूँ'' के बाद रोना रस्म में दाख़िल। अब बताइये कि कोई लड़की नाराज़ भी है तो वह किस तरह अपनी नाराज़गी दिखाए? और हम किस तरह अन्दाज़ा करें कि यह लड़की ''हूँ'' ख़ुशी से कह रही है या ज़बरदस्ती? हर चीज़ में बदशुगूनी की तरफ नज़र जाती है मगर इस रोने में बदशुगूनी का भी लेहाज़ नहीं किया जाता। मुमकिन है कि कभी कोई लड़की अक़्द के मौक़े पर नाराज़गी की वजह से रोई हो। उसी वक़्त से उस रस्म का पर्दा डाल दिया गया ताकि वाक़ेए की हक़ीक़त न खुलने पाए। अब हमारे लिये कोई चारा नहीं और हम ज़ाहिरी इक़रार के पाबन्द हैं इसलिए अक़्द पढ़ देते हैं मगर आप याद रखिये कि अगर लड़की ने दबाव से ''हूँ'' कहा हो और हक़ीक़त में राज़ी न हो तो शरीअत के हिसाब से वह निकाह कोई चीज़ नहीं होगा।

आपको अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास पूरी तरह होना चाहिए। आपको इस कश्ती (नाव) को उसके किनारे तक पहुँचने की फ़िक्र होनी चाहिए जिसे आप समुन्द्र में डाल रहे हैं। अगर उसी वक़्त से लड़की के ख़यालात अपने होने वाले शौहर के बारे में ख़राब हों तो कभी उसकी घरदारी उसके साथ अच्छी न हो सकेगी। आपका फर्ज़ है कि उसकी ज़िन्दगी में इत्मिनान व सुकून पैदा होने के तमाम रास्तों को अभी से तैयार करें। आपको इसमें कोई बुरा ख़याल भी न होना चाहिए।

रिश्तेदारी में तो अक्सर लड़कियों को रिश्तेदारों के लड़कों के साथ बचपने में खेलने का मौक़ा हासिल हो चुका होता है। बहुत मुमकिन है कि उन्हें उसी वक़्त किसी से मुहब्बत और नफरत पैदा हो चुकी हो। किसी और तरह पर नहीं बल्कि मासूमाना मुहब्बत और नफरत मगर क्या उस वक़्त जो ख़यालात पैदा हो चुके हैं वह बदल सकते हैं? अब अगर आपने उनकी क़िस्मत को जोड़ा है ऐसे लड़के के साथ जिससे उन्हें फितरती नफ़रत पैदा हो चुकी है तो हरगिज़ उनकी ज़िन्दगी

इसके बाद ठीक नहीं हो सकती। बहुत से घरों की आबादी और बर्बादी का सवाल इस मसले में छुपा है।

कुछ नई रौशनी के लोग और नयेपन के हामियों (Modern People) का यह ख़याल कि शादी को मुहब्बत की बुनियाद पर होना चाहिए यानी पहले मुहब्बत पैदा करने का मौक़ा दिया जाए फिर शादी की जाए। यह तो मेरे नज़दीक हरगिज़ ठीक नहीं है क्योंकि मुहब्बत एक परेशानी बढ़ाने वाली मौज (लहेर) है और शादी एक बनाई हुई (टिकाऊ) इमारत। कभी मज़बूत इमारत हरकत वाली लहर पर नहीं बनाई जा सकती इसलिए शादी की बुनियाद तो समझदारी भरी सोच पर हो सकती है जिसके लिए माँ–बाप की राय ज़्यादा भरोसे वाली है और उनका चुनाव ज़्यादा महफ़ूज़ है मगर फिर भी लड़की की चाहत को बिलकुल नज़रअन्दाज़ कर देना हरगिज़ ठीक नहीं है। चुनें माँ–बाप ही मगर लड़की की रज़ामन्दी ख़ुले दिल से ज़रूर हासिल करें।

इसके साथ अक़्द में सादगी और किफ़ायत शिआरी सामने रखें हरगिज़–हरगिज़ इसमें छोटेपन का ख़याल दिल में न लाएं। ख़ुद पैग़म्बरे इस्लाम (स0) से बढ़कर किसकी इज़्ज़त होगी। अगर आप (स0) चाहते तो हज़ारों रुपया शादी की तक़रीब में ख़र्च कर देते मगर आप (स0) ने अपनी बेटी सैय्यिद–ए–आलम (स0) का अक़्द जिस तरह किया। आपको मालूम है। दहेज़ सैय्यिदा का क्या था? खजूर की छाल के कुछ तकिये, चमड़े का बिस्तर, कुछ मिट्टी के बर्तन, एक चर्ख़ा और एक चक्की। आपसे यह नहीं कहा जाता कि आप भी चर्ख़ा और चक्की दीजिये मगर आप भी अपने ज़माने के हिसाब से ज़रूरत की चीज़ें अपनी हैसियत के हिसाब से दीजिए।

सैय्यिद–ए–आलम (स0) और अमीरुलमोमिनीन (अ0) का जो ज़िन्दगी गुज़ारने का आम तरीक़ा था, अल्लाह के रसूल (स0) ने उस हिसाब से काम आने वाली चीज़ें बेटी और दामाद को दीं आप भी अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने के हिसाब से काम आने वाली चीज़ों की एक लिस्ट बना लीजिये मगर उसमें सिर्फ़ दिखाने का ख़याल न होना चाहिए।

यह दिखावा नहीं तो क्या है कि दहेज़ के सामान को ज़्यादा दिखलाने के लिए हर छोटी से छोटी चीज़ एक–एक मज़दूर के सर पर रख दी इससे ज़ाहिर होता है कि न लड़की की ज़रूरतें सामने हैं, न दामाद की। बल्कि सिर्फ़ अपना दिखावा मक़सद है।

हम अगर अपनी सभी रस्मों में रसूल (स0) और अहलेबैते रसूल (स0) के अच्छे तरीक़े को सामने रखें तो हमारी ज़िन्दगी में वह इंक़ेलाब हो जाए जो हमारी आती हुई मौत को पलटा दे। वरना समझ लीजिये कि हम जल्दी ही ग़लत हर्फ़ की तरह इस दुनिया से मिट जाएंगे। कोशिश कीजिये कि ऐसा न हो। □□□

इदारा

मुख्य समाचार

मशहद और क़ुम के बाद शीराज़ हरमे अहलेबैत अतहार है: आयतुल्लाहिलउज़्मा सै0 अली ख़ामेना–ई

रहबरे इन्क़ेलाबे इस्लामी हज़रत आयतुल्लाहिलउज़्मा सै0 अली ख़ामेना–ई ने शीराज़ के दीनी तश्ख़्ख़ुस को क़ुम के तश्ख़्ख़ुस के मानिन्द क़रार देते हुए कहा कि: शीराज़ इल्म व हुनर का मरकज़ और अहलेबैत अतहार अलैहिमुस्सलाम का हरम है।

ख़बर रसाँ ऐजेन्सी की रिपोर्ट के मुताबिक़ आयतुल्लाहिलउज़्मा सै0 अली ख़ामेना–ई ने शीराज़ के दीनी तश्ख़्ख़ुस को क़ुम के तश्ख़्ख़ुस के मानिन्द क़रार देते हुए कहा कि: शीराज़ इल्म व हुनर का मरकज़ और अहलेबैत अतहार अलैहिमुस्सलाम का हरम है। फ़ारस के सूबे के लिए हुकूमत से मन्ज़ूरशुदा उमूर को जल्द से जल्द अमली जामा पहनाना चाहिए। काबीना के अरकान ने शीराज़ में रहबरे मुअज़्ज़म की मौजूदगी में एक ख़ास इज्लास तश्कील दिया जिसमें हुकूमत के तरक़्क़ियाती प्रोग्रमों की पेशरफ़्त के बारे में तफ़सील पेश की गई।

उन्होंने इस मुलाक़ात में ताकीद करते हुए फ़रमाया: फ़ारस के सूबे के लिए हुकूमत ने जिन तरक़्क़ियाती प्रोग्रामों को मन्ज़ूर किया है उन्हें जल्द से जल्द अमली जामा पहनाना चाहिए ताकि इस सूबे को मोमिन व दीनदार अवाम सूबे की मुश्किलात को हल करने के सिलसिले में हुक्काम की सरगर्म मौजूदगी को मुकम्मल तौर पर महसूस करें।

रहबरे मुअज़्ज़म ने ख़ुश्कसाली का मुक़ाबला करने के लिए हुकूमत की तदबीरों को अच्छी तदबीरें क़रार दिया और गुज़िश्ता 40 सालों में 17 बार ख़ुश्कसाली के वाक़े होने की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया कि इस से मालूम होता है कि ईरान में ख़ुश्कसाली का मुक़ाबला करने के लिए जामे तहक़ीक़ात और प्रोग्राम मुरत्तब करना चाहिए इस सिलसिले में शीराज़ में ख़ुश्कसाली के बारे में रिसर्च सेण्टर क़ायम करना एक ज़रूरी और मोअस्सर क़दम नज़र आता है।

आयतुल्लाह ने इस सिलसिले में पड़ोसी मुल्कों में इक़्तेसादी मैदान में सरगर्म ईरानियों के सरमाए को जज़्ब करने के क़दम को मुफ़ीद और ज़रूरी क़रार देते हुए फ़रमाया कि: इस इक़दाम से सूबे में इक़्तेसादी और सनती सरगर्मियों में मज़ीद रौनक़ पैदा होगी।

उन्होंने फ़ारस के सूबे के क़बीलों के मसाएल और मुश्किलात पर मुकम्मल ध्यान देने की ताकीद करते हुए फ़रमाया कि: इस सूबे में मुख़्तलिफ़ मैदानों में मुम्ताज़ और बासलाहियत अफ़राद बड़ी तादाद में मौजूद हैं और तमाम वज़ारतख़ानों को इस अज़ीम इन्सानी ज़रफ़ियत से बेहतर और ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेफ़ादह करने के लिए ठीक प्रोग्राम तैयार करना चाहिए।

आयतुल्लाह ख़ामेना–ई ने फ़ारस के सूबे में हुकूमत की तरफ़ से 3 पैट्रोकेमिकल सेण्टर क़ाएम करने की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया कि: इस सिलसिले में सूबे में मौजूद बातर्जुबा, मुफ़ीद और काम आने वाली रायों से फ़ायदा उठाना चाहिए। उन्होंने शीराज़ में हाफ़िज़शनासी और सअ्दी शनासी के तहक़ीक़ाती मराकिज़ की बुनियाद और हुनर युनिवर्सिटी के क़याम को लाज़िम क़रार देते हुए फ़रमाया कि: हुनर अगर दयानत की रूह के हमराह हो तो इन्सानी, इस्लामी और इन्क़ेलाबी इक़दार की तबलीग़ का सबसे आला और अहम ज़रिया बन सकता है।

रहबरे इन्क़ेलाबे ईरानी ने तक़वे को ख़ुदावन्दे मतआल की मुसलसल मदद और नुसरत का बाअिस क़रार देते हुए फ़रमया कि: तरक़्क़ी हासिल करने और तमाम मुश्किलात पर ग़लबा पाने के लिए तक़वा, ख़ुदावन्दे मुतआल पर तवक्कुल व भरोसा, ज़िम्मेदारी का दाएमी एहसास, तदबीर पैहम तलाश व कोशिश की ज़रूरत है।

मौलाना सै0 मुहम्मद वारिस हसन नक़वी की वफ़ात

ख़तीबे आज़म कलीमे अहलेबैत अल्लामा सै0 सिब्ते हसन नक़वी फ़ातिर जाएसी के फ़रज़न्दे अरजुमन्द और मदरसतुल वाएज़ीन लखनऊ के प्रिंस्पल डाक्टर मौलाना सै0 मुहम्मद वारिस हसन नक़वी ताबा सराह ने 4 मई 2008 ई0 को 76 साल की उम्र में रिहलत फ़रमाई। मरहूम की तदफ़ीन दारुस्सलामे हिन्द हुसैनिया हज़रत गुफ़रानमॉब लखनऊ में उलमा और तुल्लाबे उलूमे दीनिया की मौजूदगी में हुई। मरहूम की मजलिसे पन्जुम हुसैनिया हज़रत गुफ़रानमॉब लखनऊ में हुई जिसे डा0 मौलाना सै0 कल्बे सादिक़ साहब ने ख़िताब फ़रमाया। इदारा मरहूम के पसमान्दगान को ताज़ियत पेश करता है और दुआ करता है कि ख़ुदावन्दे करीम बतुफ़ैले मुहम्मद व आले मुहम्मद मरहूम की दरजात को बुलन्द फ़रमाए नीज़ जेवारे मासूमीन में जगह इनायत फ़रमाए।

मग़रिबी ताक़तों के दबाव में जौहरी प्रोग्राम तर्क नहीं करेंगे: आयतुल्लाह सै0 अली ख़ामेना-ई

ईरान के मज़हबी रहनुमा आयतुल्लाह सै0 अली ख़ामेना–ई ने कहा है कि ईरान कभी आलमी ताक़तों के दबाव में जौहरी प्रोग्राम तर्क नहीं करेगा। टी0वी0 पर ख़िताब करते हुए आयतुल्लाह ख़ामेना–ई ने कहा कि ईरान आलमी ताक़तों की तरफ़ से पाबन्दियाँ आएद करने के बावजूद जौहरी प्रोग्राम जारी रखेगा। उन्होंने कहा कि कोई भी धमकी या दबाव ईरानी क़ौम को उनके क़ानूनी हक़ की राह से पीछे नहीं हटा सकती, पुरअम्न जौहरी प्रोग्राम का हुसूल ईरानी क़ौम का हक़ है। उन्होंने कहा कि आलमी ताक़तें जौहरी टेक्नालाजी के मैदान में अपनी इजारादारी क़ाएम करना चाहती हैं। वाज़ेह रहे कि मग़रिबी मुमालिक ख़ास कर अमरीका का कहना है कि ईरान पुरअम्न जौहरी टेक्नालोजी की आड़ में जौहरी हथियार बना रहा है।

इस्राईल एक सड़ती हुई लाश है:

डा0 महमूद अहमदी नेजाद

ईरानी राष्ट्रपति डाक्टर महमूद अहमदी नेजाद ने इस्राईल की 60वीं सालगिरा पर तनक़ीद करते हुए कहा कि इस्राईल एक बदबूदार और सड़ती हुई लाश है। यह बात उन्होंने ईरानी सरकारी ख़बर रसाँ इदारे से बात करते हुए कही, उन्होंने कहा कि यहूदी रियासत के क़याम की सालगिरह एक ढोंग है और ईरान कभी भी यहूदी रियासत इस्राईल को तस्लीम नहीं करेगा।

उन्होंने कहा कि जो लोग यह समझते हैं कि इस्राईल की 60वीं सालगिरह के मौक़े पर इस सड़ती हुई लाश में जान डालकर उसे ज़िन्दा कर देंगे वह एक बहुत बड़ी ग़लती कर रहे हैं। उन्होंने इस्राईल और हिज़्बुल्लाह के दरमियान होने वाली झड़प का हवाला देते हुए मज़ीद कहा कि लेबनानियों से हार के बाद इस्राईल अपनी आख़री मंज़िलों में दाख़िल हो गया है।

इस्लामियात के विद्वान अल्लामा नक़वी को फ़ारसी की सेवाओं पर ईरान के उपराष्ट्रपति ने एवार्ड दिया

1 मई 2008 ई0 को नेश्नल म्युज़ियम, दिल्ली के कान्फ्रेन्स हाल में आयोजित होने वाली एक सभा में ईरान के उपराष्ट्रपति इस्फ़न्दयार रहीम मशाई, जो उन दिनों भारत की यात्रा पर थे, ने इस्लामियात के सम्बन्ध में फ़ारसी अदब की सेवाओं पर प्रोफ़ेसर अली मुहम्मद नक़वी को ऐवार्ड दिया। आपका सम्बन्ध अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के दीनियात विभाग से है। ज्ञात रहे कि अल्लामा नक़वी ऐसे अकेले ग़ैर ईरानी हैं जिनकी फ़ारसी व अंग्रेज़ी की किताबें ईरानी विश्वविद्यालयों के कोर्स में सम्मिलित हैं। साथ ही इसी माह में इन्क़ेलाबे इस्लामी ईरान की तीसवीं सालगिरह के मौक़े पर ख़ाना–ए–फ़रहंग जमहूरी इस्लामी ईरान देहली नौ के राएज़ने मोहतरम ने अल्लामा नक़वी को उस्तोद शहीद मुर्तज़ा मुतहहरी एवार्ड से भी नवाज़ा।